बाइबल की महत्वपूर्ण घटनाओं का अवलोकन

बाइबल की मुख्य घटनाओं को चिन्हों द्वारा स्मरण रखने का उपाय सीखें।

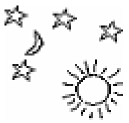

1. सृष्टि निर्माण : उत्पत्ति अध्याय 1-2, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। प्रत्येक वस्तु अच्छी थी। प्रथम मानव, आदम-हव्वा, परमेश्वर की संगति में आनन्दित थे।

2. मूल-पाप : उत्पत्ति अध्याय 3, शैतान सर्प के रूप में आकर आदम-हव्वा की परीक्षा लेता है। उन्होंने पाप किया और परमेश्वर के श्राप को समस्त सृष्टि पर लाने का कारण बने।

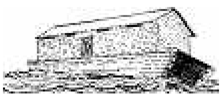

3. जल प्रलय : उत्पत्ति अध्याय 6-9, मानव बुराई में इतना अधिक बढ़ गया कि परमेश्वर ने प्रत्येक प्राणी को जल में डुबाकर नष्ट कर दिया, किन्तु नूह और उसके परिवार को एक विशाल जहाज द्वारा बचा लिया।

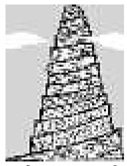

4. बाबेल का गुम्मट: उत्पत्ति अध्याय 11, मानवजाति जब बढ़ गई तो अपने गर्व में आकर उनके द्वारा एक ऐसे गुम्मट का निर्माण करना आरम्भ हुआ जिसकी चोटी आकाश से बातें करे। परमेश्वर ने उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दी, और इस प्रकार अनेकों जातियां व राष्ट्र आरम्भ हुए।

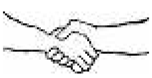

5. अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा : उत्पत्ति अध्याय 12 व 15, अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया कि वह उसके वंशज के द्वारा भूमण्डल के समस्त कुलों को आशीष देगा।

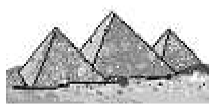

6. मिस्र का दासत्व : निर्गमन अध्याय 1-18, अब्राहम की संतानें पिरामिडों के देश मिस्र में प्रवास कर जाते हैं, वहां उनकी संख्या बढ़ती है, उन्हें दासों के समान वहां पीड़ादायक परीश्रम करना पड़ता है।

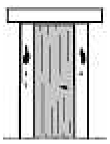

7. फसह के मेम्ने का लहू : (निर्गमन अध्याय 12-15), परमेश्वर द्वारा भेजी गई विपत्तियों तथा परमेश्वर द्वारा मिस्र के पहिलौठों को मार डालने के कारण मिस्र के राजा को स्वतन्त्रता की आज्ञा देनी पड़ी। जिन लोगों के घरों की चौखटों पर मेम्ने का लहू नहीं लगा था, उनके पहिलौठे मर गये। परमेश्वर ने लाल सागर को दो भागों में बांटा, मिस्री सेना से दास बचाए गये।

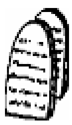

8. इस्राएलियों की व्यवस्था : (निर्गमन अध्याय 18-20), परमेश्वर ने पत्थर की पट्टियाओं पर लिखी दस आज्ञाएं दीं। सीनै पर्वत पर मूसा को दी गई इन आज्ञाओं में से प्रथम आज्ञा का उल्लंघन करने के कारण इस्राएलियों को जंगलों में चालीस वर्ष तक भटकना पड़ा।

9. इस्राएल द्वारा विजय पाना व भूमि अधिकार में लेना : यहोशु की पुस्तक, यहोशु के नेतृत्व में इस्राएल ने कनान देश को, जिसको देने के लिये परमेश्वर ने अब्राहम से वाचा बांधी थी कि वह अब्राहम के वंशजों को देगा, अपने अधिकार में लिया।

10. न्यायियों का शासनकाल: (न्यायियों की पुस्तक), जब जब भी इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन किया तब तब परमेश्वर ने अन्य जातियों के आधीन उन्हें कर दिया जो उन पर अन्धेर करते थे, और जब वे पश्चात्ताप करते और आज्ञापालन करते थे, तब परमेश्वर एक न्यायी (ऐसा यो)ा जो परमेश्वर का आज्ञाकारी होता था) उन पर नियुक्त कर देता था ताकि वे अंधेर से मुक्त किये जाएं।

11. राजाओं का शासन : (1 व 2 शामूएल की पुस्तकें), प्रारम्भ में क्रमश: शाऊल, दाऊद और सुलैमान राजा रहे। इन राजाओं ने इस्राएल के शत्रुओं को परास्त किया और शान्ति स्थापित की। परमेश्वर ने दाऊद राजा से वाचा बांधी कि उसका वंशज सर्वदा तक सिंहासन पर विराजमान रहेगा।

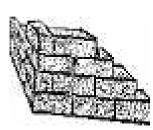

12. राजा सुलैमान का मंदिर : (1 राजा की पुस्तक), परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति से प्रथम मंदिर को आशीषित किया। लोगों के पापों के क्षमादान के लिये पुरोहितों ने पशुओं के रक्त के बलिदान चढ़ाए।

13. राज्यों का विभाजन : (1 राजा अध्याय 12), इस्राएल के बारह गोत्रों ने परस्पर वाद-विवाद किया। उनमें दस गोत्रों ने अपना अलग उत्तरी राज्य बना लिया तथा दो गोत्रों ने यहूदा नाम से दक्षिणी राज्य बनाया। दोनों राज्य ही पतित होकर मूर्तिपूजा में लिप्त हुए।

14. बन्धुवाई : (2 राजाओं की पुस्तक अध्याय 25), परमेश्वर ने लोगों को चेतावनी देने के लिये भविष्यद्वक्ता भेजे, परन्तु उन्होंने ध्यान नहीं दिया, परिणामस्वरूप परमेश्वर ने विदेशी शासक के द्वारा उन्हें बन्धुआई में भेज दिया।

15. पुनर्निर्माण : (एज्रा की पुस्तक), परमेश्वर की प्रजा ने पश्चात्ताप किया तो परमेश्वर पुन: उनके देश में लौटा लाया। उन्होंने येरूशलेम की टूटी दीवार की मरम्मत की। मलाकी ने इस युग में पुराने नियम की अंतिम पुस्तक लिखी।

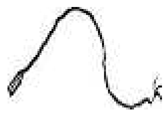

16. विदेशी शासकों द्वारा नियंत्रण : अनेक शताब्दियों तक इस्राएल राष्ट्र पर विदेशी शासकों का नियंत्रण रहा जैसे फारसी साम्राज्य, यूनानी साम्राज्य, सीरियाई साम्राज्य तथा रोमी साम्राज्य इत्यादि। इन विदेशी ताकतों के अधीन रहते हुए इस्राएल जाति को भारी कर देना पड़ा। इस युग में बाइबल की कोई पुस्तक नहीं रची गई।

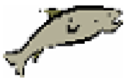

17. यीशु का जन्म और सेवकाई : (लूका की पुस्तक), यीशु को दुष्टात्माओं, हर प्रकार की बीमारियों और पाप पर अधिकार था। उन्होंने शिष्यों से कहा मनुष्यों के मछवे बनो। उन्होंने एक आत्मिक राज्य की नींव डाली और रोमी साम्राज्य के सांसारिक राजनैतिक राज्य में कोई हस्ताक्षेप नहीं किया।

18. यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना : (लूका अध्याय 23), धार्मिक अगुवों ने परमेश्वर की निन्दा करने के आरोप में यीशु को बन्दी बनाया क्योंकि उन्होंने स्वयं को परमेश्वर का पुत्र बताया था। रोमी सिपाहियों ने उन्हें क्रूस पर चढ़ाकर घात किया। वे हमारे पापों लिये मरे और गाढ़े गये।

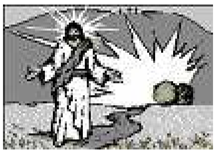

19. पुनरूत्थान : (लूका अध्याय 24), यीशु तीसरे दिन मृतकों में से जीवित हुए, उन्होंने नये युग का आरम्भ करते हुए प्रतिज्ञा की, यदि कोई पापों से पश्चात्ताप् करके उन पर विश्वास करेगा उसे वे जिला उठाएंगे।

20. पवित्रात्मा का आगमन : (प्रेरितों के काम अध्याय 2), अपने पुनरूत्थान के पश्चात् प्रभु यीशु अपने पिता के पास लौट गये और हमारे जीवनों में निवास करने के लिये पवित्रात्मा भेजा। जिन विश्वासियों ने पिन्तेकुस्त के दिन पवित्रात्मा पाया था उन्होंने अपने सिरों पर आग की सी जीभें ठहरते हुए देखा।

21. विश्वास का फैलना : (प्रेरितों के काम पुस्तक), पवित्रात्मा से परिपूर्ण होने के पश्चात् विश्वासियों ने चहुंओर सुसमाचार फैलाया जो गेहूं के दाने के समान फलवन्त हुआ जैसाकि यीशु ने पहले ही कह दिया था। इसी काल में यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य नामक पुस्तक की रचना की जो बाइबल की अंतिम पुस्तक है। अनेकों विश्वासी शहीद हुए।

संपूर्ण बाइबल की पुस्तकें रचे जाने के बाद की ऐतिहासिक घटनाएं

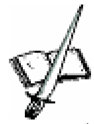

22. कलीसिया तथा प्रान्त संयुक्त हुए : 311 इस्वी रोमी सम्राट कॉन्सटिनटाईन ने मसीही-धर्म को मान्यता दी, अन्य-जाति लोग अपूर्ण विश्वास के साथ कलीसिया में आ मिले।

23. विभिन्न विश्वास-वचन : भ्रान्त शिक्षाओं का सामना करते हुए विश्वासियों ने उन सिध्दान्तों को लिखा जिन पर वे सहमत थे। प्रेरितों का विश्वास-वचन मूल सुसमाचार को अधिक स्पष्टता से परिभाषित करता है। नीकिया का विश्वास वचन त्रिएकत्व पिता, पुत्र, पवित्रात्मा का दृढ़ता के साथ उल्लेख करता है।

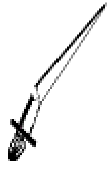

24. रोमी-साम्राज्य का पतन : 6 व 7 शताब्दी आपसी मतभेद, भ्रष्टाचार व दुष्ट सरकारें रोमी साम्राज्य के छिन्न-भिन्न हो जाने के कारण रहे, फलत: साम्राज्य बलहीन होकर लुप्त हो गया।

25. रोम के बिशप का उदय : रोम की कलीसिया ने रोमन कैथलिक नाम से एक कलीसिया की स्थापना की तथा समस्त कलीसियाई प्रशासन की बागडोर अपने हाथों में लेने का दावा पेश किया। किन्तु पूर्वीय कट्टर पंथी कलीसियाओं ईस्टर्न ऑरथोडौक्स चर्च ने इस अधिकार का विरोध किया।

26. अंधकार युग : सन् 600 – 1000 ईस्वी शिक्षा क्षेत्र में कमज़ोरी आई। लोग परमेश्वर का वचन नहीं पढ़ते थे, और उनके अगुवे सिखाते थे कि उद्धार कर्मो से होता है। मठों को छोड़कर समस्त यूरोप में कलीसिया निर्बल हो चुकी थी परन्तु एशिया में कलीसिया बढ़ी।

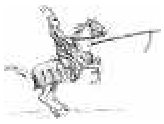

27. इस्लाम के विरूद्ध धर्मयु) : यूरोपियन सेनाओं ने पवित्र-भूमि इस्राएल को वापस अपने अधिकार में लेने का और मुस्लिम आक्रमणकारियों से अन्य भूमि-क्षेत्र छीनने का प्रयास किया।

28. प्रोटिस्टैन्ट धर्म सुधार आन्दोलन : सन् 1500 ईस्वी, मार्टिन लूथर एवं अन्य कुछ लोगों ने आम भाषा में बाइबल के अनुवाद किये, उद्धार विश्वास से होता है इसकी शिक्षा दी, व रोमन कैथलिक अध्यक्ष पोप का विरोध किया।

29. सुसमाचार-प्रचार की नवचेतना : सन् 166-1900 , सुसमाचार प्रचारकों ने लोगों से प्रभु यीशु को हृदयों में ग्रहण करने, पवित्रात्मा को जीवन परिवर्तन करने देने, व नया-जन्म प्राप्त करने का आग्रह किया।

30. तीव्र गति से विश्वास का विश्वव्यापी विस्तार : सन् 1900 से वर्तमानकाल तक, मिशनरी लोग मसीही-विश्वास को संसार के कोने कोने में फैला रहे हैं।

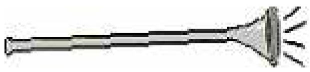

31. प्रभु यीशु का द्वितीय आगमन: यीशु द्वारा इसकी पूर्व-घोषणा हुई, लूका अध्याय 21, व प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, स्वर्ग से तुरही का शब्द होगा, विरोधियों को दंड देने के लिये प्रभु पीड़ाएं पृथ्वी पर डालेगा, शैतान को नाश करेगा और कुछ मृतक अनन्त जीवन के लिये तथा कुछ न्याय व अनन्त दंड के लिये जिलाए जाएंगे।

इन घटनाओं को दोहराने का अभ्यास कीजिए

चिन्हों को तथा इतिहास के क्रम को स्मरण करने का अभ्यास कीजिए कि किस प्रकार एक घटना क्रम दूसरे से संबंध ा रखता है, बार बार दोहराएं जब तक कि आपको याद न हो जाए। इस प्रकार आपको बाइबल का संपूर्ण इतिहास एक ही कहानी के समान लगेगा। जिन व्यक्तियों को आप शिक्षा देते हैं उन्हें भी इस इतिहास क्रम का सारांश सीखने में सहायता कीजिये।

निम्नलिखित चिन्ह क्या प्रकट करते हैं, सूची देखकर जांच कीजिये कि आपको कितना याद है?

1 सूर्य चन्द्रमा,	8 पत्थर की पट्टियां,	15 उजाड़ नगर,	22 तलवार-बाइबल,	29 यीशु, हृदय,
2 सर्प,	9 तलवार,	16 कोड़ा,	23 स्क्रोल और पैन,	30 ग्लोब,
3 बड़ी नाव,	10 खंजर,	17 मछली,	24 टूटी हुई तलवार,	31 तुरही।
4 उंचा गुम्मट,	11 मुकुट,	18 क्रूस,	25 बिशप की	
5 हाथ मिलाना,	12 बड़े खण्ड,	19 खाली कब्र,	26 बुझी हुई मोमबत्ती,	
6 पिरामिड,	14 बेड़ियां,	20 लपटें,	27 घुड़ सवार योद्धा,	

7 लहू लगी हुई द्वार की चौखट, 13 टूटा हुआ मुकुट, 21 बीज बोना, टोपी, 28 खुली हुई बाइबल,